International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.379 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 6, November 2022 |

कालिदास के **महाकाव्यों में** नारी **चित्रण**

MRS. MANISHA GUPTA

ASSISTANT PROFESSOR, DEPT. OF SANSKRIT, SHAHEED JEETRAM GOVT. COLLEGE, NAGAUR, DEEG, RAJASTHAN, INDIA

सार

कवि-कुल शिरोमणि 'कनिष्ठिकाधिष्ठित' कालिदास संस्कृत वाङ्ग्मय के ही नहीं, भारतीय मनीषा के भी सर्वश्रेष्ठ निदर्शन हैं। वर्षा-काल में अनायास फूट पड़े निर्झरों की भाँति हृदय के अंतस्तल से उमड़कर बहते हुए उनके काव्य ने विश्व भर के काव्य रसिकों को संतृप्त किया है।

प्रकृति और नारी इस कवि-गुरु के दो ऐसे प्रधान प्रिय क्षेत्र रहे हैं, जिनमें इनकी काव्य मनीषा ने सर्वाधिक विचरण किया है। परन्तु अन्य सामान्य कवियों की भाँति उन्होंने प्रकृति का केवल आलंबन, उद्दीपन या आलंकारिक रूप में और नारी का केवल नख-शिख वर्णन या संयोग-वियोग के रूप में ही चित्रण नहीं किया है। कवि का प्रतिभा-कौशल तो वहाँ दिखायी पड़ता है, जहाँ उन्होंने प्रकृति और नारी में अन्योन्याश्रय संबंध स्थापित कर दिया है। कभी तो प्रकृति की सहचरी नारी और कभी नारी की सहचरी प्रकृति - ऐसे अंतर्संबंधों से कालिदास-काव्य अटा-पटा है। कहीं उपमा, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों के रूप में प्रकृति और नारी का सादृश्य दिखायी पड़ता है, कहीं वही प्रकृति उद्दीपन रूप में दिखायी पड़ती है तो कहीं शांति प्रदायिनी रूप में। कहीं प्रकृति नारी की सहायिका होती है, कहीं प्रकृति में नारी दिखायी पड़ती है, कहीं नारी में प्रकृति के दर्शन होते हैं।

कालिदास-रचित मान्य सात ग्रंथों में दो - 'ऋतुसंहार' और 'मेघदूत' विशुद्धतः प्रकृति-चित्रण और प्रकृत्यानुसार मानवीय संवेदनाओं का विशद वर्णन है। 'ऋतुसंहार' में, जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, भारत में पायी जानेवाली छहो ऋतुओं का केवल मनोहारी वर्णन ही नहीं है, वरन् वह मानवीय, विशेषकर नारी की मनोदशा एवं व्यवहारों पर पड़नेवाले प्रभाव के रूप में प्रस्तुत है। कवि की कीर्ति के सबसे प्रकाशवान स्तंभ 'मेघदूत'-जैसा प्रकृतिजन्य मानवीय संवेदना के उद्दीपन का सुरम्य वर्णन अन्यत्र दुर्लभ है। भावना की पराकाष्ठा पर पहुँचकर निर्जीव मेघों को दूत बना लेना और उसके साथ स्वयं यक्ष एवं यक्ष-प्रिया का सजीव तादात्म्य स्थापित कर लेना विश्व साहित्य की संभवतः अपूर्व घटना है। इसके बारे में प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान विल्सन की मान्यता है कि ''मेरा अपना मत है कि हमारे पास क्या तो श्रेण्य (classical) कविता और क्या आधुनिक (modern) कविता - कहीं भी ऐसे नमूने नहीं मिलेंगे, जिनमें इससे अधिक कोमलता अथवा सुकुमार भावना है।'

परिचय

कालिदास (संस्कृत: *कालिदासः*) पहली शताब्दी ई.पू. के संस्कृत भाषा के महान कवि और नाटककार थे।[1] उन्होंने भारत की पौराणिक कथाओं और दर्शन को आधार बनाकर रचनाएँ की और उनकी रचनाओं में भारतीय जीवन और दर्शन के विविध रूप और मूल तत्त्व निरूपित हैं। कालिदास अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण राष्ट्र की समग्र राष्ट्रीय चेतना को स्वर देने वाले कवि माने जाते हैं और कुछ विद्वान उन्हें राष्ट्रीय कवि का स्थान तक देते हैं।[2]

अभिज्ञानशाकुंतलम् कालिदास की सबसे प्रसिद्ध रचना है। यह नाटक कुछ उन भारतीय साहित्यिक कृतियों में से है जिनका सबसे पहले यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद हुआ था। यह पूरे विश्व साहित्य में अग्रगण्य रचना मानी जाती है। मेघदूतम् कालिदास की सर्वश्रेष्ठ रचना है जिसमें कवि की कल्पनाशक्ति और अभिव्यंजनावादभावाभिव्यन्जना शक्ति अपने सर्वोत्कृष्ट स्तर पर है और प्रकृति के मानवीकरण का अद्भुत रखंडकाव्ये से खंडकाव्य में दिखता है।[3]

कालिदास वैदर्भी रीति के कवि हैं और तदनुरूप वे अपनी अलंकार युक्त किन्तु सरल और मधुर भाषा के लिये विशेष रूप से जाने जाते हैं।[4]

उनके प्रकृति वर्णन अद्वितीय हैं और विशेष रूप से अपनी उपमाओं के लिये जाने जाते हैं।[5] साहित्य में औदार्य गुण के प्रति कालिदास का विशेष प्रेम है और उन्होंने अपने श्रृंगार रस प्रधान साहित्य में भी आदर्शवादी परंपरा और नैतिक मूल्यों का समुचित ध्यान रखा है।[1,2,3]

कालिदास के परवर्ती कवि बाणभट्ट ने उनकी सूक्तियों की विशेष रूप से प्रशंसा की है।[6]

कालिदास किस काल में हुए और वे मूलतः किस स्थान के थे इसमें काफ़ी विवाद है। चूँकि, कालिदास ने द्वितीय शुंग शासक अग्निमित्र को नायक बनाकर मालविकाग्निमित्रम् नाटक लिखा और अग्निमित्र ने १७० ईसापूर्व में शासन किया था, अतः कालिदास के समय की एक सीमा निर्धारित हो जाती है कि वे इससे पहले नहीं हुए हो सकते। छठीं सदी ईसवी में बाणभट्ट ने अपनी

रचना हर्षचरितम् में कालिदास का उल्लेख किया है तथा इसी काल के पुलकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख में कालिदास का जिक्र है अतः वे इनके बाद के नहीं हो सकते। इस प्रकार कालिदास के प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व से छठी शताब्दी ईसवी के मध्य होना तय है।[7] दुर्भाग्यवश इस समय सीमा के अन्दर वे कब हुए इस पर काफ़ी मतभेद हैं। विद्वानों में (i) द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व का मत (ii) प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व का मत (iii) तृतीय शताब्दी ईसवी का मत (iv) चतुर्थ शताब्दी ईसवी का मत (v) पाँचवी शताब्दी ईसवी का मत, तथा (vi) छठीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध का मत; प्रचलित थे। इनमें ज्यादातर खण्डित हो चुके हैं या उन्हें मानने वाले इक्के दुक्के लोग हैं किन्तु मुख्य संघर्ष 'प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व का मत और 'चतुर्थ शताब्दी ईसवी का मत' में है।[8]

प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व का मत -

परम्परा के अनुसार कालिदास उज्जयिनी के उन राजा विक्रमादित्य के समकालीन हैं जिन्होंने ईसा से 57 वर्ष पूर्व विक्रम संवत् चलाया।[9] विक्रमोर्वशीय के नायक पुरुरवा के नाम का विक्रम में परिवर्तन से इस तर्क को बल मिलता है कि कालिदास उज्जयनी के राजा विक्रमादित्य के राजदरबारी कवि थे। इन्हें विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक माना जाता है।

चतुर्थ शताब्दी ईसवी का मत -

प्रो॰ कीथ और अन्य इतिहासकार कालिदास को गुप्त शासक चंद्रगुप्त विक्रमादित्य और उनके उत्तराधिकारी कुमारगुप्त से जोड़ते हैं, जिनका शासनकाल चौथी शताब्दी में था।[10] ऐसा माना जाता है कि चंद्रगुप्त द्वितीय ने विक्रमादित्य की उपाधि ली और उनके शासनकाल को स्वर्णयुग माना जाता है।[4,5,6]

विवाद और पक्ष-प्रतिपक्ष -

- कालिदास ने शुंग राजाओं के छोड़कर अपनी रचनाओं में अपने आश्रयदाता या किसी साम्राज्य का उल्लेख नहीं किया। सच्चाई तो यह है कि उन्होंने पुरुरवा और उर्वशी पर आधारित अपने नाटक का नाम विक्रमोर्वशीयम् रखा। कालिदास ने किसी गुप्त शासक का उल्लेख नहीं किया। विक्रमादित्य नाम के कई शासक हुए, संभव है कि कालिदास इनमें से किसी एक के दरबार में कवि रहे हों। अधिकांश विद्वानों का मानना है कि कालिदास शुंग वंश के शासनकाल में थे, जिनका शासनकाल 100 सदी ईसापूर्व था।
- अग्निमित्र, जो मालविकाग्निमित्र नाटक का नायक है, कोई सुविख्यता राजा नहीं था, इसीलिए कालिदास ने उसे विशिष्टता प्रदान नहीं की। उनका काल ईसा से दो शताब्दी पूर्व का है और विदिशा उसकी राजधानी थी। कालिदास के द्वारा इस कथा के चुनाव और मेघदूत में एक प्रसिद्ध राजा की राजधानी के रूप में उसके उल्लेख से यह निष्कर्ष निकलता है कि कालिदास अग्निमित्र के समकालीन थे।[1,2]
- यह स्पष्ट है कि कालिदास का उत्कर्ष अग्निमित्र के बाद (150 ई॰ पू॰) और 634 ई॰ पूर्व तक रहा है, जो कि प्रसिद्ध ऐहोल के शिलालेख की तिथि है, जिसमें कालिदास का महान कवि के रूप में उल्लेख है। यदि इस मान्यता को स्वीकार कर लिया जाए कि माण्डा की कविताओं या 473 ई॰ के शिलालेख में कालिदास के लेखन की जानकारी का उल्लेख है, तो उनका काल चौथी शताब्दी के अन्त के बाद का नहीं हो सकता।
- अश्वघोष के बुद्धचरित और कालिदास की कृतियों में समानताएं हैं। यदि अश्वघोष कालिदास के ऋणी हैं तो कालिदास का काल प्रथम शताब्दी ई॰ से पूर्व का है और यदि कालिदास अश्वघोष के ऋणी हैं तो कालिदास का काल ईसा की प्रथम शताब्दी के बाद ठहरेगा।
- हम कोई भी तिथि स्वीकार करें, वह हमारा उचित अनुमान भर है और इससे अधिक कुछ नहीं।[7,8,9]

जन्म स्थान

कालिदास के जन्मस्थान के बारे में भी विवाद है। मेघदूतम् में उज्जैन के प्रति उनकी विशेष प्रेम को देखते हुए कुछ लोग उन्हें उज्जैन का निवासी मानते हैं।

साहित्यकारों ने ये भी सिद्ध करने का प्रयास किया है कि कालिदास का जन्म उत्तराखंड के रूद्रप्रयाग जिले के कविल्ठा गांव में हुआ था। कालिदास ने यहीं अपनी प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण की थी औऱ यहीं पर उन्होंने मेघदूत, कुमारसंभव औऱ रघुवंश जैसे महाकाव्यों की रचना की थी। कविल्ठा चारधाम यात्रा मार्ग में गुप्तकाशी में स्थित है। गुप्तकाशी से कालीमठ सिद्धपीठ वाले रास्ते में कालीमठ मंदिर से चार किलोमीटर आगे कविल्ठा गांव स्थित है। कविल्ठा में सरकार ने कालिदास की प्रतिमा स्थापित कर एक सभागार का भी निर्माण करवाया है जहां पर हर साल जून माह में तीन दिनों तक गोष्ठी का आयोजन होता है, जिसमें देशभर के विद्वान भाग लेते हैं।[3,4]

कालिदास के प्रवास के कुछ साक्ष्य बिहार के मधुबनी जिला के उच्चैठ में भी मिलते हैं। कहा जाता है विद्योतमा (कालिदास की पत्नी) से शास्त्रार्थ में पराजय के बाद कालिदास यहीं गुरुकुल में रुके। कालिदास को यहीं उच्चैठ भगवती से ज्ञान का वरदान मिला और वह महाज्ञानी बनें, कुछ विद्वान यह कहते हैं की महाकवि कालिदास का जन्म उच्चैठ में हुआ था और तब उसके बाद में वह उज्जैन गए थे । यहां आज भी कालिदास का डीह है। यहाँ की मिट्टी से बच्चों के प्रथम अक्षर लिखने की परंपरा आज भी यहाँ प्रचलित है।

कुछ विद्वानों ने तो उन्हें बंगाल और उड़ीसा का भी सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। कहते हैं कि कालिदास की श्रीलंका में हत्या कर दी गई थी लेकिन विद्वान इसे भी कपोल-कल्पित मानते हैं।[11]

जीवनसाथी

कथाओं और किंवदंतियों के अनुसार कालिदास शारीरिक रूप से बहुत सुंदर थे और विक्रमादित्य के दरबार के नवरत्नों में एक थे। कहा जाता है कि प्रारंभिक जीवन में कालिदास अनपढ़ और मूर्ख थे।[10,11,12]

कालिदास का विवाह विद्योत्तमा नाम की राजकुमारी से हुआ। ऐसा कहा जाता है कि विद्योत्तमा ने प्रतिज्ञा की थी कि जो कोई उसे शास्त्रार्थ में हरा देगा, वह उसी के साथ विवाह करेगी। जब विद्योत्तमा ने शास्त्रार्थ में सभी विद्वानों को हरा दिया तो हार को अपमान समझकर कुछ विद्वानों ने बदला लेने के लिए विद्योत्तमा का विवाह महामूर्ख व्यक्ति के साथ कराने का निश्चय किया। चलते चलते उन्हें एक वृक्ष दिखाई दिया जहां पर एक व्यक्ति जिस डाल पर बैठा था, उसी को काट रहा था। उन्होंने सोचा कि इससे बड़ा मूर्ख तो कोई मिलेगा ही नहीं। उन्होंने उसे राजकुमारी से विवाह का प्रलोभन देकर नीचे उतारा और कहा- "मौन धारण कर लो और जो हम कहेंगे बस वही करना"। उन लोगों ने स्वांग भेष बना कर विद्योत्तमा के सामने प्रस्तुत किया कि हमारे गुरु आप से शास्त्रार्थ करने के लिए आए है, परंतु अभी मौनव्रती हैं, इसलिए ये हाथों के संकेत से उत्तर देंगे। इनके संकेतों को समझ कर हम वाणी में आपको उसका उत्तर देंगे। शास्त्रार्थ प्रारंभ हुआ। विद्योत्तमा मौन शब्दावली में गूढ़ प्रश्न पूछती थी, जिसे कालिदास अपनी बुद्धि से मौन संकेतों से ही जवाब दे देते थे। प्रथम प्रश्न के रूप में विद्योत्तमा ने संकेत से एक उंगली दिखाई कि ब्रह्म एक है। परन्तु कालिदास ने समझा कि ये राजकुमारी मेरी एक आंख फोड़ना चाहती है। क्रोध में उन्होंने दो अंगुलियों का संकेत इस भाव से किया कि तू मेरी एक आंख फोड़ेगी तो मैं तेरी दोनों आंखें फोड़ दूंगा। लेकिन कपटियों ने उनके संकेत को कुछ इस तरह समझाया कि आप कह रही हैं कि ब्रह्म एक है लेकिन हमारे गुरु कहना चाह रहे हैं कि उस एक ब्रह्म को सिद्ध करने के लिए दूसरे (जगत्) की सहायता लेनी होती है। अकेला ब्रह्म स्वयं को सिद्ध नहीं कर सकता।[13,14,15] राज कुमारी ने दूसरे प्रश्न के रूप में खुला हाथ दिखाया कि तत्व पांच है। तो कालिदास को लगा कि यह थप्पड़ मारने की धमकी दे रही है। उसके जवाब में कालिदास ने घूंसा दिखाया कि तू यदि मुझे गाल पर थप्पड़ मारेगी, मैं घूंसा मार कर तेरा चेहरा बिगाड़ दूंगा। कपटियों ने समझाया कि गुरु कहना चाह रहे हैं कि भले ही आप कह रही हो कि पांच तत्व अलग-अलग हैं पृथ्वी, जल, आकाश, वायु एवं अग्नि। परंतु यह तत्व प्रथक्-प्रथक् रूप में कोई विशिष्ट कार्य संपन्न नहीं कर सकते अपितु आपस में मिलकर एक होकर उत्तम मनुष्य शरीर का रूप ले लेते है जो कि ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है। इस प्रकार प्रश्नोत्तर से अंत में विद्योत्तमा अपनी हार स्वीकार कर लेती है। फिर शर्त के अनुसार कालिदास और विद्योत्तमा का विवाह होता है। विवाह के पश्चात कालिदास विद्योत्तमा को लेकर अपनी कुटिया में आ जाते हैं और प्रथम रात्रि को ही जब दोनों एक साथ होते हैं तो उसी समय ऊंट का स्वर सुनाई देता है। विद्योत्तमा संस्कृत में पूछती है "किमेतत्" परंतु कालिदास संस्कृत जानते नहीं थे, इसीलिए उनके मुंह से निकल गया "ऊट्र"। [5,6]उस समय विद्योत्तमा को पता चल जाता है कि कालिदास अनपढ़ हैं। उसने कालिदास को धिक्कारा और यह कह कर घर से निकाल दिया कि सच्चे विद्वान् बने बिना घर वापिस नहीं आना। कालिदास ने सच्चे मन से काली देवी की आराधना की और उनके आशीर्वाद से वे ज्ञानी और धनवान बन गए। ज्ञान प्राप्ति के बाद जब वे घर लौटे तो उन्होंने दरवाजा खटखटा कर कहा - कपाटम् उद्घाट्य सुन्दरि! (दरवाजा खोलो, सुन्दरी)। विद्योत्तमा ने चकित होकर कहा -- अस्ति कश्चिद् वाग्विशेषः (कोई विद्वान लगता है)।[16,17,18]

इस प्रकार, इस किम्वदन्ती के अनुसार, कालिदास ने विद्योत्तमा को अपना पथप्रदर्शक गुरु माना और उसके इस वाक्य को उन्होंने अपने काव्यों में भी जगह दी। कुमारसंभवम् का प्रारंभ होता है- अस्त्युत्तरस्याम् दिशि... से, मेघदूतम् का पहला शब्द है- कश्चित्कांता... और रघुवंशम् की शुरुआत होती है- वागार्थविव... से।

रचनाएं

छोटी-बड़ी कुल लगभग चालीस रचनाएँ हैं जिन्हें अलग-अलग विद्वानों ने कालिदास द्वारा रचित सिद्ध करने का प्रयास किया है।[12] इनमें से मात्र सात ही ऐसी हैं जो निर्विवाद रूप से कालिदासकृत मानि जाती हैं: तीन नाटक(रूपक): अभिज्ञान शाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम् और मालविकाग्निमित्रम्; दो महाकाव्य: रघुवंशम् और कुमारसंभवम्; और दो खण्डकाव्य: मेघदूतम् और ऋतुसंहार। इनमें भी ऋतुसंहार को प्रो॰ कीथ संदेह के साथ कालिदास की रचना स्वीकार करते हैं।[13]

नाटक

मालविकाग्निमित्रम् कालिदास की पहली रचना है, जिसमें राजा अग्निमित्र की कहानी है। अग्निमित्र एक निर्वासित नौकर की बेटी मालविका के चित्र से प्रेम करने लगता है। जब अग्निमित्र की पत्नी को इस बात का पता चलता है तो वह मालविका को जेल में डलवा देती है। मगर संयोग से मालविका राजकुमारी साबित होती है और उसके प्रेम-संबंध को स्वीकार कर लिया जाता है।

अभिज्ञान शाकुन्तलम् कालिदास की दूसरी रचना है जो उनकी जगतप्रसिद्धि का कारण बना। इस नाटक का अनुवाद अंग्रेजी और जर्मन के अलावा दुनिया के अनेक भाषाओं में हुआ है। इसमें राजा दुष्यंत की कहानी है जो वन में एक परित्यक्त ऋषि पुत्री शकुन्तला (विश्वामित्र और मेनका की बेटी) से प्रेम करने लगता है। दोनों जंगल में गंधर्व विवाह कर लेते हैं। राजा दुष्यंत अपनी राजधानी लौट आते हैं। इसी बीच ऋषि दुर्वासा शकुंतला को शाप दे देते हैं कि जिसके वियोग में उसने ऋषि का अपमान किया वही उसे भूल जाएगा। काफी क्षमाप्रार्थना के बाद ऋषि ने शाप को थोड़ा नरम करते हुए कहा कि राजा की अंगूठी उन्हें दिखाते ही सब कुछ याद आ जाएगा। लेकिन राजधानी जाते हुए रास्ते में वह अंगूठी खो जाती है। स्थिति तब और गंभीर हो गई जब शकुंतला को पता चला कि वह गर्भवती है। शकुंतला लाख गिड़गिड़ाई लेकिन राजा ने उसे पहचानने से इनकार कर दिया। जब एक मछुआरे ने वह अंगूठी दिखायी तो राजा को सब कुछ याद आया और राजा ने शकुंतला को अपना लिया। शकुंतला श्रृंगार रस से भरे सुंदर काव्यों का एक अनुपम नाटक है। [19,20]कहा जाता है काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला (कविता के अनेक रूपों में अगर सबसे सुन्दर नाटक है तो नाटकों में सबसे अनुपम शकुन्तला है।)[7,8]

विक्रमोर्वशीयम् एक रहस्यों भरा नाटक है। इसमें पुरूरवा इंद्रलोक की अप्सरा उर्वशी से प्रेम करने लगते हैं। पुरूरवा के प्रेम को देखकर उर्वशी भी उनसे प्रेम करने लगती है। इंद्र की सभा में जब उर्वशी नृत्य करने जाती है तो पुरूरवा से प्रेम के कारण वह वहां अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाती है। इससे इंद्र गुस्से में उसे शापित कर धरती पर भेज देते हैं। हालांकि, उसका प्रेमी अगर उससे होने वाले पुत्र को देख ले तो वह फिर स्वर्ग लौट सकेगी। विक्रमोर्वशीयम् काव्यगत सौंदर्य और शिल्प से भरपूर है।

महाकाव्य

कुमारसंभवम् उनके महाकाव्यों के नाम है। रघुवंशम् में सम्पूर्ण रघुवंश के राजाओं की गाथाएँ हैं, तो कुमारसंभवम् में शिव-पार्वती की प्रेमकथा और कार्तिकेय के जन्म की कहानी है।

रघुवंशम् में कालिदास ने रघुकुल के राजाओं का वर्णन किया है।

खण्डकाव्य

मेघदूतम् एक गीतिकाव्य है जिसमें यक्ष द्वारा मेघ से सन्देश ले जाने की प्रार्थना और उसे दूत बना कर अपनी प्रिय के पास भेजने का वर्णन है। मेघदूत के दो भाग हैं - पूर्वमेघ एवं उत्तरमेघ।

ऋतुसंहारम् में सभी ऋतुओं में प्रकृति के विभिन्न रूपों का विस्तार से वर्णन किया गया है।

अन्य रचनाएँ

इनके अलावा कई छिटपुट रचनाओं का श्रेय कालिदास को दिया जाता है, लेकिन विद्वानों का मत है कि ये रचनाएं अन्य कवियों ने कालिदास के नाम से की। नाटककार और कवि के अलावा कालिदास ज्योतिष के भी विशेषज्ञ माने जाते हैं। उत्तर कालामृतम् नामक ज्योतिष पुस्तिका की रचना का श्रेय कालिदास को दिया जाता है। ऐसा माना जाता है कि काली देवी की पूजा से उन्हें ज्योतिष का ज्ञान मिला। [9]इस पुस्तिका में की गई भविष्यवाणी सत्य साबित हुईं।

- श्रुतबोधम्
- श्रृंगार तिलकम्
- श्रृंगार रसाशतम्
- सेतुकाव्यम्
- पुष्पबाण विलासम्
- श्यामा दंडकम्
- ज्योतिर्विद्याभरणम्

काव्य सौन्दर्य

कालिदास को कविकुलगुरु, कनिष्ठिकाधिष्ठित और कविताकामिनीविलास जैसी प्रशंसात्मक उपाधियाँ प्रदान की गयी हैं जो उनके काव्यगत विशिष्टताओं से अभिभूत होकर ही दी गयी हैं। कालिदास के काव्य की विशिष्टताओं का वर्णन निम्नवत किया जा सकता है:

भाषागत विशिष्टताएँ

कालिदास वैदर्भी रीति के कवि हैं और उन्होंने प्रसाद गुण से पूर्ण ललित शब्दयोजना का प्रयोग किया है। प्रसाद गुण का लक्षण है - "जो गुण मन में वैसे ही व्याप्त हो जाय जैसे सूखी ईंधन की लकड़ी में अग्नि सहसा प्रज्वलित हो उठती है"[14] और कालिदास की भाषा की यही विशेषता है।

कालिदास की भाषा मधुर नाद सुन्दरी से युक्त है और समासों का अल्पप्रयोग, पदों का समुचित स्थान पर निवेश, शब्दालंकारों का स्वाभाविक प्रयोग इत्यादि गुणों के कारण उसमें प्रवाह और प्रांजलता विद्यमान है।[21,22,23]

अलंकार योजना

कालिदास ने शब्दालंकारों का स्वाभाविक प्रयोग किया है और उन्हें उपमा अलंकार के प्रयोग में सिद्धहस्त और उनकी उपमाओं को श्रेष्ठ माना जाता है।[15] उदहारण के लिये:

संचारिणी दीपशिखेव रात्रौ यं यं व्यतीयाय पतिंवरा सा।
नरेन्द्रमार्गाट्ट इव प्रपेदे विवर्णभावं स स भूमिपालः।।[16]

अर्थात् स्वयंवर में बारी-बारी से प्रत्येक राजा के सामने गमन करती हुई इन्दुमती राजाओं के सामने से चलती हुई दीपशिखा की तरह लग रही थी जिसके आगे बढ़ जाने पर राजाओं का मुख विवर्ण (अस्वीकृत कर दिए जाने से अंधकारमय, मलिन) हो जाता था।

अभिव्यंजना

कालिदास की कविता की प्रमुख विशेषता है कि वह चित्रों के निर्माण में सबकुछ न कहकर भी अभिव्यंजना द्वारा पूरा चित्र खींच देते हैं। जैसे:

एवं वादिनि देवर्शौ पार्श्वे पितुरधोमुखी।
लीला कमल पत्राणि गणयामास पार्वती।।[17]

अर्थात् देवर्षि के द्वारा ऐसी (पार्वती के विवाह प्रस्ताव की) बात करने पर, पिता के समीप बैठी पार्वती ने सिर झुका कर हाथ में लिये कमल की पंखुड़ियों को गिनना शुरू कर दिया।

कालिदास जी की रचनाओं की खास बातें

कालिदास जी अपनी रचनाओं में अलंकार युक्त, सरल और मधुर भाषा का इस्तेमाल करते थे। अपनी रचनाओं में श्रंगार रस का भी बखूबी वर्णन किया है। कालिदास जी ने अपनी रचनाओं में ऋतुओं की भी व्याख्या की है जो कि सराहनीय है। कालिदास जी के साहित्य में संगीत प्रमुख अंग रहा। संगीत के माध्यम से कवि कालिदास ने अपनी रचनाओं में प्रकाश डाला। कालिदास जी अपनी रचनाओं में आदर्शवादी परंपरा औऱ नैतिक मूल्यों का भी ध्यान रखते थे।

आधुनिककाल में कालिदास

कूडियट्टम् में संस्कृत आधारित नाटकों का एक रंगमंच है, जहां भास के नाटक खेले जाते हैं। महान कूडियट्टम कलाकार और नाट्य शास्त्र के विद्वान स्वर्गीय नाट्याचार्य विदुषकरत्तनम पद्मश्री गुरू मणि माधव चक्यार ने कालिदास के नाटकों के मंचन की शुरूआत की। कालिदास को लोकप्रिय बनाने में दक्षिण भारतीय भाषाओं के फिल्मों का भी काफी योगदान है। कन्नड़ भाषा की फिल्मों कविरत्न कालिदास और महाकवि कालिदास ने कालिदास के जीवन को काफी लोकप्रिय बनाया। इन फिल्मों में स्पेशल इफेक्ट और संगीत का बखूबी उपयोग किया गया था। वी शांताराम ने शकुंतला पर आधारित फिल्म बनायी थी। ये फिल्म इतनी प्रभावशाली थी कि इसपर आधारित अनेक भाषाओं में कई फिल्में बनाई गई।

हिन्दी लेखक मोहन राकेश ने कालिदास के जीवन पर एक नाटक आषाढ़ का एक दिन की रचना की, जो कालिदास के संघर्षशील जीवन के विभिन्न पहलुओं को दिखाता है। १९७६ में सुरेंद्र वर्मा ने एक नाटक लिखा, जिसमें इस बात का जिक्र किया गया है कि पार्वती के शाप के कारण कालिदास कुमारसंभव को पूरा नहीं कर पाए थे। शिव और पार्वती के गार्हस्थ जीवन का अश्लीलतापूर्वक वर्णन करने के लिए पार्वती ने उन्हें यह शाप दिया था। इस नाटक में कालिदास को चंद्रगुप्त की अदालत का सामना करना पड़ा, जहां पंडितों और नैतिकतावादियों ने उनपर अनेक आरोप लगाए। इस नाटक में न सिर्फ एक लेखक के संघर्षशील जीवन को दिखाया गया है, बल्कि लेखक की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के महत्व को भी रेखांकित किया गया है।

अस्ति कश्चित वागर्थीयम् नाम से डॉ कृष्ण कुमार ने १९८४ में एक नाटक लिखा, यह नाटक कालिदास के विवाह की लोकप्रिय कथा पर आधारित है। इस कथा के अनुसार, कालिदास पेड़ की उसी टहनी को काट रहे होते हैं, जिस पर वे बैठे थे। विद्योत्तम से अपमानित दो विद्वानों ने उसकी शादी इसी कालिदास के करा दी। जब उसे ठगे जाने का अहसास होता है, तो वो कालिदास को ठुकरा देती है। साथ ही, विद्योत्तमा ने ये भी कहा कि अगर वे विद्या और प्रसिद्धि अर्जित कर लौटते हैं तो वह उन्हें स्वीकार कर लेगी। जब कालिदास विद्या और प्रसिद्धि अर्जित कर लौटे तो सही रास्ता दिखाने के लिए कालिदास ने उन्हें पत्नी न मानकर गुरू मान लिया।

विचार-विमर्श

आलंकारिक तादात्म्यः

उपमा, उत्प्रेक्षा आदि आलंकारिक रूप में कवि ने प्रकृति और नारी का तादात्म्य बहुतायत से प्रस्तुत किया है। 'मेघदूत' में वर्षाकाल के मेघों एवं गंगा से युक्त कैलाश का वर्णन करते हुए यक्ष मेघ से कहता है कि जिस प्रकार खिसकी हुई सफेद साड़ी वाली कामिनी प्रिय के अंक में अवस्थित होती है, उसी प्रकार कैलाश के ऊपर श्वेत वस्त्र-सी गंगा गिरी हुई है। कैलाश-स्थित अलका मेघों को उसी प्रकार धारण करती है, जिस प्रकार कामिनी अपने ऊपर मोती गुँथे बालों को धारण करती है-

तस्योत्संगे प्रणयिन इव स्रस्तगंगादुकूलां

न त्वं दृष्ट्वा न पुनरलकां ज्ञास्यसे कामचारिन्।

या वः काले वहति सलिलोद्गारमुच्चैर्विमाना

मुक्ताजालग्रथितमलकं कामिनी याभ्रवृन्दम्।। [24,25,26]

उत्तरमेघ में यक्ष अपनी विरहिनी प्रिया को प्रिय-वियुक्त चकवी तथा पाले की मार से बर्बाद कमलिनी की तरह कहता है -

तां जानीथाः परिमितकथां जीवितं मे द्वितीयं

दूरीभूते मयि सहचरे चक्रवाकीमिवैकाम्।

गाढ़ोत्कण्ठां गुरुषु दिवसेष्वेषु गच्छत्सुबालां

जातां मन्ये शिशिरमथितां पद्मिनीं वाऽन्यरूपाम्।। 3

शकुंतला के ओठों की लालिमा नव पल्लव की भाँति है, भुजाएँ मसृण डण्ठल की तरह हैं तथा उसके पूरे व्यक्तित्व में फूलों की भाँति आकर्षण है -

अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौबाहू।

कुसुममिव लोभनीयं यौवनमंगेषु सन्नद्धम।। 4

शकुन्तला का वन की लताओं और पादपों से इतना घनिष्ठ संबंध है कि वे एक दूसरे के मनोभावों को भी समझ लेते हैं। वाटिका में भ्रमण करती हुई शकुन्तला को प्रतीत होता है कि यह मौलसिरी का पौधा अपनी पल्लवरूपी उँगलियों से उसे जल्दी करने के लिए कह रहा है। 5

उद्दीपक-संबंधः

नारी-मनोभाव के उद्दीपक रूप में प्रकृति की अति प्रचलित परंपरा की प्रचुर प्रस्तुति कालिदास के काव्य में हुई है। 'ऋतुसंहार', जिसमें षड्ऋतुओं का वर्णन हुआ है, कामिनियों के चित्त पर पड़नेवाले प्रकृति के प्रभावों से भरा पड़ा है। वर्षाकाल में विरह-पीड़ित अश्रुपूरित कमलनयनाएँ उसी प्रकार श्रृंगार से वियुक्त हो जाती हैं, जिस प्रकार पीले पत्ते वृक्षों से -

विलोचनेन्दीवरवारिबिन्दुभि-

निर्षिक्तबिम्बाधरचारुपल्लवाः।

निरस्तमाल्याभरणानुलेपनाः

स्थिता निराषाः प्रमदाः प्रवासिनाम्।। 6

'ऋतुसंहार' की हेमंतऋतु पूरे सर्ग में नायिकाओं को पीड़ित-आनंदित करती रही है। आश्रम की वाटिका में सखियों के साथ पादप-सिंचन करती हुई शकुन्तला मनोरम प्रकृति के सान्निध्य में अनागत प्रणय की भावना से भर जाती है। इसी प्रकार 'मेघदूत', 'कुमारसंभव', 'रघुवंश' आदि अनेक प्रसंगों से भरे पड़े हैं, जिनमें प्रकृति के सुन्दर साहचर्य ने कामिनियों के मन में प्रणय का संचार किया है।

शांतिदायक संबंधः

कालिदास के काव्य में प्रकृति केवल उद्दीपक के रूप में ही नहीं, वरन् नारियों की पीड़ा कम करने वाले के रूप में भी आया है। मेघदूत में नखक्षत से पीड़ित नायिकाएँ वर्षा की प्रथम बँदों से सुख प्राप्त करती हैं -

नखपदसुखान्प्राप्य वर्षाग्रबिन्दु। 7

अंग-सादृश्य में प्रकृतिः

प्राकृतिक अवयवों के साथ नारी-अंगों की सादृश्य स्थापना में कालिदास की चित्तवृत्ति खूब रमी है। पके बिम्ब-फल के साथ रक्तिम ओठों का सादृश्य अनेकत्र उपस्थित हुआ है -

1. नीवीबन्धोच्छ्सितषिथिलं यत्र बिम्बाधराणां। 8
2. उमामुखेबिम्बफलाधरोष्ठे 9 आदि

यक्ष-प्रिया के अतुलनीय सौन्दर्य का वर्णन करते हुए शरीर की समता प्रियंगु लताओं से, नयनों की भयभीत हिरनी के नेत्रों से, मुख-शोभा की चाँद से, सुचिक्कण बालों की मयूरपंख से और भ्रूभंगों की जल-तरंगों से समता स्थापित की गयी है। 10

प्रकृति और नारी की एकात्मकताः

नगर के कोलाहल से दूर प्रकृति की सुरम्य गोद में पली शकुन्तला जब कण्व के आश्रम से विदा होने को होती है तो प्रकृति ही उसका श्रृंगार करती है। किसी वृक्ष ने चन्द्रमा के समान उज्जवल और मांगलिक रेशमी वस्त्र दिया, किसी ने महावर। इस तरह नारी-सौंदर्य के साथ प्रकृति की एकात्मकता अन्यत्र दुर्लभ है।[27]

केवल शरीर-सज्जा ही नहीं, वरन् भावात्मक एकात्मकता के भी दर्शन 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अध्याय में होते हैं। विदा होती शकुन्तला को कोकिलाएँ कुहुक कर प्रस्थान की आज्ञा प्रदान करती हैं। 11 हिरन-शावक प्रस्थान करती शकुन्तला का रास्ता नहीं छोड़ता 12 तथा हिरनियों ने कुश के ग्रास उगल दिए, भौरों ने नाचना बंद कर दिया और पल्लवों ने आँसू बहाए। 13

इस प्रकार नारी अंग और उसके मनोभावों का सादृश्य और एकात्मकता कालिदास के काव्य में प्राणधारा की तरह व्याप्त है।

परिणाम

नारी कन्या रूप में:- संस्कृत साहित्य में महाकवि कालिदास द्वारा कुमार संभवम् महाकाव्य में पार्वती का चित्रण नारी के रूप में किया गया है। आर्य संस्कृति के प्रतिनिधि कवि कालिदास माने जाते हैं। आर्य कन्या के आदर्श को पार्वती के रूप में उल्लिखित करते हैं। पार्वती आर्य कन्या के लिये प्रतिमान बनी है और इसके लिये आर्य कन्या को अदम्य, अजेय तथा जितेन्द्रिय, बनाने का मुख्य साधन तपस्या ही है। कुमार संभवम के पंचम सर्ग में भग्न मनोरथा पार्वती शिव को पति के रूप में प्राप्त करने के लिये जगत की सभी भौतिक सुख-सुविधाओं को छोड़कर कठोर तपस्या की साधना में जुट गयी। पार्वती की तपस्या दिन-प्रतिदिन इतनी कठोर होती जा रही थी कि तपोवन में रहने वाले मुनियों की तपस्या भी प्रभावहीन प्रतीत होने लगी थी। इस प्रकार कठोर से कठोर तपस्या करके अपने अकीष्ट शिव को पति के रूप में प्राप्त करना। मुख्य उद्देश्य था-

इयेष सा कर्तुमबन्ध्यरूपतां
समाधिमास्थाय तपोभिरात्मनः।
अवाप्यते कथामन्यथा इयं
तथा विधं प्रेम पतिश्च तादृशः।।
(कुमार सम्भव 5/2)

पार्वती की तपस्या का फल था-उत्कट कोटि का अलौकिक प्रेम और तादृशः पतिः तथा मृत्युको जीतने वाला पति-जगत के समस्त पति मृत्यु के क्रीत दास है केवल एक ही व्यक्ति मृत्यु को जीतने वाला है और वह है मृत्युजय महादेव। आज तक कोई अन्य कन्या मृत्युंजय महादेव को पति के रूप में वरण करने में समर्थ नहीं हो पायी जो कार्य पार्वती ने तपस्या के द्वारा सिद्ध करके दिखाया है। तथाविधं शब्द में गंभीर अर्थ की अभिव्यंजना हुई है भगवान शंकर ने पार्वती को उचित आदर-सम्मान दिया है। पत्नी को जितना उच्च स्थान भगवान शंकर ने दिया है उतना किसी अन्य देवता ने नहीं दिया है। कालिदास के तत्कालिक समाज में स्त्रियों को स्वतंत्रता प्राप्त थी अपना वर स्वयं वरण करती थी-अभिज्ञान शाकुन्तलम् में शकुन्तला, कुमार संभवम् में पार्वती और रघुवंश महाकाव्य में इन्दुमती का विवाह पूर्णतः उनकी इच्छा से हुआ है। विधवा स्त्री की उस समाज में स्थिति का ज्ञान रघुवंश के उन्नीसवें सर्ग में होता है जब राजा अग्निवर्ण की मृत्यु हो जाती है तब उनकी विधवा रानी का राज्य मंत्रियों के द्वारा सम्मान एवं अधिकार के साथ विधिवत् राज्याभिषेक किया जाता है।10

"मालविकाग्निमित्रम" में "परिब्राजिका" का उल्लेख प्राप्त होता है। जो विधवा थी लेकिन विदुषी इतनी थी कि विद्वानों की योग्यता का परीक्षण भी करती थी।

महाकवि कालिदास अभिज्ञान शाकुन्तलम सप्तम सर्ग में स्वयं कहते हैं कि सहधर्मिणी का परित्याग पाप होता है, "कस्तस्य धर्मदार परित्यागिनो नाम संकीर्तयितुं चिन्तयिष्यति।"11

पत्नी को इतना उच्च स्थान प्रदान करना सत्कार का महान प्रकर्ष है, आदर की पराकाष्ठा है। गौरी की यह साधना भारतीय कन्याओं के लिये अनुकरणीय वस्तु है। संस्कृति के प्रारम्भ से भारतीय कन्याओं के लिये एक महान प्रारम्भ से भारतीय कन्याओं के लिये एक महान आदर्श कोई यदि है तो वह है पार्वती। आज भी "गौरी पूजन" का महत्व इस प्रकार के पूजा में आदर्श के प्रति आदर एवं सम्मान भाव आज भी दृष्टिगोचर होता है।

संस्कृत वाङ्मय देदीप्यमान जगत में महर्षि वाल्मीकि एवं वेदव्यास के बाद जिन महाकवियों ने सर्वाधिक सम्मान एवं लोक प्रियता अर्जित की है उसका नाम है कालिदास भवभूति। इन लोगों ने अपने काव्यों में नारी समाज का सम्यक् दिग्दर्शन किया है। कालिदास की रचनाओं में समाज का सांगोपांग वर्णन हुआ है तथा उनकी रचनाओं में नारी समाज का एक ऐसा स्वरूप दृष्टिगत होता है जिसे समाज की प्रमुख भित्ति कह सकते हैं। तत्कालीन समाज में नारी समाज का महत्व पूर्ण अंग थी जिसकी सहभागिता सभी कार्यों में थी। सभी आश्रमों में गृहस्थ आश्रम को श्रेष्ठ समझा जाता था इस आश्रम का आधार पत्नी होती थी क्योंकि गृहस्थ उसी की सहायता से अपने धार्मिक अनुष्ठान का सम्पादन करता था।

रघुवंश महाकाव्य के चतुर्दश सर्ग में प्रसंग प्राप्त होता है कि राम ने अश्वमेध यज्ञ के समय अपने वामभाम में अद्धार्गिनी सीता की

स्वर्णमयी मूर्ति की स्थापना की थी।6

कुमार संभवम के छठे सर्ग में हिमालय राज पार्वती के विवाह के सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय मेना से सुनना चाहते हैं। "शैलः सम्पूर्ण कामोऽपि मेनामुखमुदैक्षत प्रायेण गृहणी नेत्रः, कन्यार्थेषु कुटुम्बिनः।"7
कालिदास के तत्कालीक समाज में नारी के वचनबद्धता का मानना पुरुष का प्रमुख धर्म था जैसे कैकेयी के वचन का अनुपालन करने हेतु राजा दशरथ राम को चैदह वर्ष का वनवास देते हैं।8

कुमार संभवम् से यह ज्ञात होता है कि पार्वती को समस्त विद्यालयों को ज्ञान था अभिज्ञान शाकुन्तलम् में प्रियं वदा, अनुसूया, शकुन्तला शिक्षितस्यिा है जो कण्ण प्रत्तषि द्वारा शिक्षित हुए थे।
गृहणी सचिवः सखी मिथः प्रियशिष्या ललिता कलाविधौ।
करूणविमुखेन मृत्युना हरतां त्वां वद किं न मे हृतम्।।9

कालिदास के तत्कालिक समाज में स्वतंत्रता प्राप्त थी, अपना वर स्वयं वरण करती थी-अभिज्ञान शाकुन्तलम् में शकुन्तला, कुमार संभवम् में पार्वती, और रघुवंश महाकाव्य में इन्दुमती का विवाह पूर्णतः उनकी इच्छा से हुआ है। विधवा स्त्री की उस समाज में स्थिति का ज्ञान रघुवंश के 19वें सर्ग में होता है। राजा अग्निवर्ण की मृत्यु हो जाती है। तब राज्य मंत्रियों के द्वारा सम्मान एवं अधिकार के साथ उनकी विधवा रानी का विधिवत राज्याभिषेक किया जाता है।10

मालविकाग्निमित्रम में "परिव्राजिका" का उल्लेख प्राप्त होता है जो विधवा थी लेकिन विदुषी इतनी थी कि विद्धानों की योग्यता का परीक्षण भी करती थी।

महाकवि कालिदास ने अभिज्ञान शाकुन्तलम् सप्तम सर्ग में स्वयं कहते हैं कि सहधर्मिणी का परित्याग पाप होता है-
"कस्तस्य धर्मदार परित्यागिनों नाम संकीर्तयितुं चिन्तयिष्यति।"11

सीता राम के प्रश्न का प्रत्युत्तर देते हुये कहती है कि- मनुष्य उसी वस्तु के लिये उत्तरदायी होता है, जिस पर उसका अधिकार होता है मैं केवल अपने हृदय की स्वामिनी हूँ उसी पर मेरा पूरी तरह से नियंत्रण है जो कि सदैव आपका चिन्तन करता रहता है। शरीर के अंग मेरे वश में नहीं है वह पराधीन होते हैं। यदि रावण ने बलात् स्पर्श कर लिया हो तो मेरा इसमें कोई दोष नहीं है।

इस प्रकार मेरे चरित्र पर लांछन लगाना कथमपि उचित नहीं है। महर्षि वाल्मीकिं सीता से कहलाते हैं कि आपने मेरे निर्बल अंश को क्यों पकड़ लिया है मेरे सबल अंश को क्यों पीछे ढकेल दिया है। नारी का दुर्बल अंश है उसका नारीत्व -स्त्रीत्व का सबल अंश है पत्नीत्व और पतिव्रता सीता कहती है कि हे नरशार्दूल! आप मनुष्यों में श्रेष्ठ हैं परन्तु क्रोधावेश में आकर आप जो अनुचित बातें कह रहे हैं वे साधारण जन के समान हैं। सीता कहती है कि मेरा स्वभाव और हृदय दोनों निश्छल है पवित्र है मैं हृदय से आपकी भक्ति करती हूँ - सीता के मर्मस्पर्शी शब्द कितने ओजस्वी एवं महत्वपूर्ण हैं स्त्री समाज का प्रतिनिधित्व करने के लिये -
त्वया तु नरशार्दूल क्रोधमेवा नुवर्तता।
लघुनेव मनुष्येण स्त्रीत्वमेव पुरस्कृतम्।।
न प्रमाणीकृतः पाणिर्बाल्ये बालेन पीड़ितः।
मम भक्तिश्च शीलश्च सर्व ते पृष्ठतः कृतम।।[28]
(वाल्मीकि रामायण)

सीता के इस प्रकार के वचन को सुनकर सहृदय व्यक्ति के आँखों में सहानुभूति के आँसू निकल पड़ते हैं।

कालिदास ने सीता का चरित्र चित्रण जिस वैदग्धवाणी से किया है वह आज भी मानव चित्त को मोहित कर देने वाली है।

प्रजापालन की वेदी पर भववान श्री राम ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर के समाज में एक आदर्श उपस्थित किया है लेकिन परित्यक्ता वैदेही ने अपना आदर्श उपस्थित किया है। घने जंगल में जब लक्ष्मण जी सीता को छोड़कर जाने लगे तो सीता ने जो आत्मनिवेदन किया है वह भारतीय नारी के गौरव, मर्यादा तथा त्याग का ज्वलन्त उदाहरण है।

लोकमंगल की वेदी पर आत्मोत्सर्ग भारतीय नरेशों का आदर्श प्रजापालन व्रत है।

प्रजा अनुरंजन के लिये राम ने अपनी प्राणवल्लभा सीता को छोड़ने में थोड़ा भी देर नहीं किया गर्भभार से आक्रान्त सीता राम की बुराई न करके इस हृदय विदारक दृश्य के औचित्य को अच्छी तरह से समझ रही है किन्तु फिर भी परिस्थिति वश उलाहना देने में देर नहीं लगाती है और लक्ष्मण से पूछती है कि इस विकट परिस्थिति में परित्याग शास्त्र के अनुकूल है क्या? यही इक्ष्वाकुवंश की

मर्यादा है? फिर भी सीता सोचती है कि राम तो किसी का अहित नहीं सोच सकते हैं हो सकता है यह मेरे किसी जन्म के कर्म का फल हो। इस प्रकार सीता कर्मवाद के सिद्धान्त से आत्मतुष्टि का अनुभव कर रही हैं।
कल्याण बुद्रधेश्थवा तवायं न कामचारो मयिशड़क्नीयः।
ममैव जन्मान्तर पातकानां विपाक विस्फूर्ज धुर प्रमेयः।।

सीता जी सोच रही है कि मुझे अपने पापों से मुक्त होने का एकमात्र साधन है तपस्या और साधना भारतीय नारियों के लिये आदर्श एवं त्याग की प्रतिमूर्ति सीता जी की एक विषाद भरी प्रार्थना जो समाज में सीता को और उच्चस्थान प्राप्त करती है त बवह कहती है कि राजा राम अयोध्या के महाराजा है और प्रजाओं के कल्याण के विषय में सोचना एक राजा का धर्म है इसलिये एक सामान्य प्रजा की ही भाँति मुझे तपस्विनी की भी चिन्ता करे। जनक नन्दिनी सीता की इस प्रार्थना में कितना ओज एवं मर्मस्पर्शिता भरी है तथा आत्म त्याग की भावना तथा इससे भी ज्यादा करूणा क्या हो सकती है-
"तपस्विसामान्यमवेक्षणीया।"
इस प्रकार का जीवन सदैव से ही नारियों का आत्मत्याग का जीवन रहा है।

निष्कर्ष

कालिदास प्रकृति और मानव के मिलन से अनुपम सौन्दर्य की उत्पत्ति मानते थे। उन्होंने अपने ग्रन्थों में प्रकृति और नारी के यौवनमय लावण्य और सौन्दर्य का हृदयग्राही वर्णन किया है। कुमारसम्भव में हिमालय पर्वत की शोभा का वर्णन, रघुवंश में वशिष्ठ ऋषि का तपोवन तथा त्रिवेणी के सौन्दर्य का वर्णन तथा ऋतु-संहार में सारी ऋतुओं के सौन्दर्य का वर्णन अत्यन्त आकर्षक है। मेघदूत में भी प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन बहुत ही सुन्दर हुआ है। अभिज्ञान शाकुन्तलम् नाटक का प्रथम अंक तो प्राकृतिक दृश्यों के चित्रण से भरा पड़ा है। कालिदास प्रकृति सौन्दर्य के महान् उपासक थे। ऐसा प्रतीत होता है मानो प्रकृति का मनोरम सौन्दर्य ही उनकी भाषा है।

प्रकृति-सौन्दर्य के साथ-साथ कालिदास का नारी-सौन्दर्य वर्णन भी मनमोहक है। ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी नारी-सौन्दर्य में विशेष रुचि थी। कुमारसम्भव में महाकवि ने पार्वती सौन्दर्य का नख-शिख तक वर्णन किया है। अभिज्ञान शाकुन्तलम् में शकुन्तला के यौवन और सौन्दर्य का वर्णन तो अत्यन्त सुन्दर हुआ है।

महाकवि कहते हैं कि शकुन्तला को बनाने के पहले ब्रह्मा ने उसे चित्त में परिकल्पित किया होगा। मेघदूत में यक्ष, मेघ से अपनी पत्नी के सौन्दर्य का वर्णन करता है। परन्तु महाकवि ने नारी के बाह्य सौन्दर्य को प्रधानता न देकर उसके शुभ गुणों सौन्दर्य को प्रधानता दी है । अतः कालिदास ने सौन्दर्य के साथ-साथ मर्यादित व्यवस्था संतुलित जीवन का आदर्श प्रस्तुत किया है,[29] जो एकदम अनूठा है ।

संदर्भ

1. राम गोपाल, Kālidāsa: His Art and Culture Archived 2014-07-19 at the वेबैक मशीन गूगल पुस्तक (अभिगमन तिथि १५.०७.२०१४)।
2. ↑ हजारी प्रसाद द्विवेदी, राष्ट्रीय कवि कालिदास Archived 2014-07-20 at the वेबैक मशीन, हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रन्थावली, गूगल पुस्तक (अभिगमन तिथि १५.०७.२०१४)।
3. ↑ रामजी उपाध्याय, महाकवि कालिदास की कृतियां-----....--! + ऋतुसंहार:-ऋतुसंहार कालिदास की प्रथम काव्य कृति है। इतिहासकारों के अनुसार बाल कवि कालिदास ने काव्य कला का आरंभ ऋतुवर्णनपरक इसी लघु काव्य से किया था।-#अश्वनी पान्डेय: संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास Archived 2014-07-20 at the वेबैक मशीन गूगल पुस्तक (अभिगमन तिथि १५.०७.२०१४)।
4. ↑ आचार्य दण्डी ने लिखा है कि कालिदास वैदर्भी रीति के सर्वोच्च प्रतिष्ठाता हैं --

   लिप्ता मधुद्रवेणासन् यस्य निर्विषया गिरः।
   तेनेदं वर्त्म वैदर्भ कालिदासेन शोधितम्॥

5. ↑ "उपमा कालिदासस्य, भारवेरर्थगौरवम्..."
6. ↑ "निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिसु। प्रीतिर्मधुर सान्द्रासु...।।" -- बाणभट्ट, हर्षचरितम्।
7. ↑ उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', संस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखम्भा भारती अकादमी, पृष्ठ 202
8. ↑ उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', संस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखम्भा भारती अकादमी, पृष्ठ 202

9. ↑ संस्कृत साहित्य सोपान Archived 2014-07-27 at the वेबैक मशीन गूगल पुस्तक, (अभिगमन तिथि 16.07.2014)
10. ↑ अच्च्युतानंद घिल्डियाल और गोदावरी घिल्डियाल - कालिदास और उसका मानवीय साहित्य Archived 2014-07-27 at the वेबैक मशीन गूगल पुस्तक, (अभिगमन तिथि 16.07.2014)
11. ↑ अच्च्युतानंद घिल्डियाल और गोदावरी घिल्डियाल - कालिदास और उसका मानवीय साहित्य Archived 2014-07-27 at the वेबैक मशीन गूगल पुस्तक, (अभिगमन तिथि 16.07.2014)
12. ↑ उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', संस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखम्भा भारती अकादमी, पृष्ठ १९९
13. ↑ ए बी कीथ, संस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखम्भा भारती अकादमी, पृष्ठ
14. ↑ "चित्तं व्याप्नोति यः क्षिप्रं शुष्केन्धनमिवानलः। स प्रसादः स्मस्तेषु रसेसु रचानासु वा।।"
15. ↑ "उपमा कालिदासस्य...।"
16. ↑ रघुवंशम् ६/६७
17. ↑ कुमारसंभवम् ६/८४
18. 'मेघदूतम्', संपादक- डा0 संसारचन्द्र एवं पं0 मोहनदेव पंत, प्रकाशक- मोतीलाल बनारसीदास, 1979
19. पूर्वमेघ, 65
20. उत्तरमेघ, 23
21. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्', प्रथम अंक, पृ0 74, संपादक- सुबोधचन्द्र पन्त, प्रकाशक- मोतीलाल बनारसीदास, 1970
22. वही, पृ0 71
23. 'ऋतुसंहारम्' संपादक- व्यंकटाचार्य उपाध्याय एवं एम0 आर0 काले, प्रकाशक- मोतीलाल बनारसीदास,1997
24. पूर्वमेघ, 37
25. उत्तरमेध, 7
26. कुमारसंभवम्, 67
27. उत्तरमेध, 44
28. 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्', चतुर्थ सर्ग, श्लोक - 9
29. वही, चतुर्थ सर्ग, श्लोक - 11